



लोकशाही अने लोकमत

दक्षाबेन आर. गोहिल

राज्य शास्त्र विभाग , सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट.

लोकशाहीनी उत्तम अने प्रचलीत व्याख्याओमांथी अेक व्याख्या प्रमाणे लोकशाही अे लोकोनी, लोको वडे, अने लोको माटे चालती व्यवस्था छे. लोकशाहीना चार स्तंभो छे. १. शासन २. प्रशासन ३. न्यायतंत्र ४. मीडिया. लोकशाहीना आ चार स्तंभो छे. देशना बहुजन समाज के गुरुजन समाजना लोकोनो लोकशाहीना चार पायामा केटली भागीदारी छे. तेना परथी आपणे कही शकीअे के आपणा देशमा लोकोनी सता छे के नही ? अने जो होय तो प्रमाण केटलुं छे ?



१. शासन:

शासनना त्रण अंगो छे. सरकारनी केबीनेट, सताधारीपक्ष अने विरोध पक्ष. सताधारी पक्षनी नीतीओने सरकारनी केबीनेट अमली बनावी देशनो वहीवट चलावे छे. विरोध पक्ष चोकीदारी करीने सतानुं नियमन करे छे. सताधारी पक्षना राष्ट्रीय अध्यक्ष, विरोधपक्षना नेता बहुजन के गुरुजन समाजमांथी आवे छे.

२. प्रशासन:

लोकशाहीमां वहीवटी शासन ध्वारा अमलदारो ज खरा अर्थमां सताधारी होय छे. अेक अमलदार घणा समय सुधी सत्ता साथे रहयो छे. विश्वना लोकशाही देशोमां सहुथी खतरनाक, अधम अमलदारशाही भारत देशमां जोवा मळी छे.

३. न्यायतंत्र:

मंडलपंचनी २७२ अनामतमां क्रिमीलीयर उमेदवारोनी बढती अने मेरीट अंगेनो चुकादो सर्वोच्च अदालते आप्यो छे. न्यायतंत्रनुं काम योग्य चुकादाओ आपवानुं छे.

४. मीडिया:

लोकशाहीना चार आधार स्तंभमां सौथी महत्वनो स्तंभ मीडिया छे. मीडियामां सहुथी असरकारक साधन टी.वी. छे. सरकारी दुरदर्शन तेमज खानगी चैनलनुं संचालन उच्च तेमज विदेशी मालीकोना हाथमां छे. बहुजन समाज आमा अपवादरूप प्रतिनिधित्व करे छे. राष्ट्रिय अखबार जे अंग्रजीमां बहार पडे छे. तेनी मालीकी उद्योगपतिनी छे. लोकशाहीमां विचार, माहीती अने ज्ञानना प्रचारना माध्यम तरीके अत्यंत असरकारक अने सरळ परिबळ समाचारपत्रो छे. अेना मारफत लोकमत घडाय छे. लोक शिक्षणनुं कार्य थाय छे. आ संदर्भमां समाचारपत्रनी विशेष जवाबदारी छे. माटे समाचारपत्रो तटस्थ अने पक्षपात रहित होवा जोइअे. अेमा कोइ अेक जाति के वर्गनुं प्रभुत्व होवु जोइअे नही. समाचार पत्रो अे कोइ स्थापित हित के पक्ष संस्थाना समर्थनमां अेक तरफी अहेवाल प्रसिध्ध न करवा जोइअे. जो आवुं थाय तो लोकशाहीनी भावना रुधांय छे. साचुं लोकशाहीनुं कार्य

थतुं नथी. कलमनो उपयोग वफादारी के सत्यनो नही पण कोना हीत माटे थाय छे ? ते प्रश्न छे. भारतदेशमां चालती शासन, प्रशासन तथा न्यायतंत्रनी व्यवस्था तरफी शिक्षितो अने बुद्धिजीवीओमां जनमत बनाववानुं काम आज्ञादीनी लडाइथी आज सुधी चलावी रहया छे. परंतु तेमा अपवाद जोवा मळे छे.

वंचित वर्गनी स्थिति :

लोकशाहीना चार स्थंभोमां बे वर्गमां वहेंचायेली भारतीय प्रजामांथी मोटा भागनी व्यवस्थांमां वंचितवर्ग दास बनी कंगाळ स्थितिमां रहे छे. लोकशाही नाम धरावती आपणा देशनी आ प्रणाली केवी ? बहुजन समाज के गुरुजन समाज आज पण लोकतंत्रना चारे स्तंभोमां ओछी भागीदारी धरावतो होवाथी विकासना तमाम क्षेत्रोमां खुब ज पाछळ रही गयेल छे.

भारत देश लोकशाही देश छे. आपणा देशे लोकशाही व्यवस्था स्वीकारी होवाथी सामान्यजनोमां लोकशाही विशेष पायानी जाणकारी होवी अत्यंत आवश्यक अने अनिवार्य छे. लोकशाहीमां पुख्तवयना नागरिको शिक्षित प्रशिक्षित, जागृत, होवा जोइअे. प्रतिनिधिओ चारित्रवान होवा जोइअे. शासकपक्ष अने विरोधपक्ष इमानदार होवा जोइअे. तोज लोकशाही साचा अर्थमां लोकोनुं, लोको माटे अने लोको ध्वारा राजय बनी शके.

लोकशाहीमां चुंटणी अनिवार्य छे. लोकशाहीमां मताधिकार अे मतदारोनी महामुली मुडी छे अने जबरदस्त ताकात छे. लोकशाहीमां जेना मत वधारे तेनुं शासन स्थापय तेवा आदर्श छे. माटे मत अे शकितनो स्त्रोत छे. माटे मतदान करवु आवश्यक छे. मतदारोनी जागृतताने कारणे कोइ अेक पक्षने स्पष्ट बहुमती मेळववा हवे वार लागशे. माटे स्पष्ट बहुमती मेळववा विविध राजकीय पक्षो चुंटणी जोडाणो करी उभा छे.

चुंटणी टाणे लोकोअे सावधान रहेवुं जरुरी छे. लोकोअे भूतकाळमां तेना पक्षे करेला लोकहित राष्ट्रहित अंगेनी कामगीरी तपासवी जोइअे. आ भारतना बंधारणनी विशेषता छे के मतदारोना मत विना ते चुंटाइ न शके अेटला माटे ज चुंटणी टाणे मतदारोनी झुपडीओअे अेमना गली महोलाओमां उमेदवारो फरता होय छे खरेखर तो तमाम उमेदवारो विशेष जाणकारी मेळववी जोइअे उमेदवार केवा विस्तारमां रहे छे तेनी जीवनशैली केवी छे.

प्रजाना प्रतिनिधिओअे पोताना मतविस्तारनुं योग्य प्रतिनिधित्व करवु आवश्यक छे. प्रतिनिधिओ सुखी छे प्रजा दुखी छे प्रजाने उनाळामा पीवाना पाणी माटे श्रम उठाववो पडे छे. प्रजा पगपाळा के सायकलथी कामे जाय छे, प्रजाना बाळको बाळ मजुरी करता जोवा मळे छे पायानी घणी जरुरीयातो वगर गंदी वसाहतोमां झुपडपट्टीओमां अनेक अडचणो वेठी दुख मय दिवसो वितावी रहे छे जे महिलाओने आदरथी जोवामां आवे छे परंतु व्यावहारमां महिलाओ श्रम करती अने कचरो वीणती आज जोवा मळे छे. डो. बाबासाहेब आंबेडकरना शब्दोमां कहीअे तो महिला राष्ट्र निर्मात्री छे. महिला जटली शिक्षित हशें संस्कारीत हशे तेवो ज समाज अने राष्ट्र निर्माण थवानो छे. माटे शिक्षण अति आवश्यक छे.

लोकशाहीमां लोकोनो विकास अे ज राष्ट्रनो विकास छे जो लोको शिक्षित हशे तो ज राष्ट्रनो विकास छे परंतु आज स्थिति अे निर्माण थइ छे के भारतीय नागरिको जे गरीब गदी वसाहतो झुपडीओमा रहे छें जेने रोजी-रोटी माटे फाफा छे ते नागीरको पोताना बाळकोने मोंधी फी भरीने खानगी शाळामां कइ रीते अभ्यास करावी शकशे ? आज शिक्षणनुं जे रीते प्राइवेटिझेशन अने कोमशीयलीझेशन थइ रहुं छे ते लोको माटे हितकारी नथी. लोको माटे हितकारी न होवाथी राष्ट्र माटे पण हितकारी नथी आज देशमां जे वस्ती वधारे थइ रहयो छे तेनु अेक कारण शिक्षणनो अभाव पण छे माटे शिक्षणनी व्यवस्था अेवी ज होवी जोइअे के तमाम स्तरना लोकोना बाळको कोइ पण जातना भेदभाव वगर अेक ज स्तर अभ्यासकूमनी शाळा कोलेजोमा अभ्यासकरे अने अे शिक्षणनी जवाबदारी सरकारनी ज होवी जोइअे. अेवो लोकमत तैयार करवो जोइअे. वडाप्रधान मुख्यमंत्री साधन संपन्न अने आर्थिक नबळा वर्गना बाळको अेक ज स्तर अने अेक ज अभ्यासकूमनी शाळा कोलेजोमां अभ्यास करे तो तमाम बाळकोने अभ्यास करवानी समान तक मळे आज आपणा देशमां अे स्थिति निर्माण थइ छे के अमुक शाळामां उच्च शिक्षको अभ्यास करावे तो बीजी बाजु शिक्षणनुं प्रशिक्षण न मेळवनार शिक्षको अभ्यास करावी रहया छे. साधन संपन्न परिवारना बाळको अने आर्थिक नबळा वर्गना बाळकोनी शाळाओ लगभग जुदी थइ गइ छे जयारे शिक्षण अे बेझीक जरुरीयात होइ ते माटे तमाम बाळकोनुं शिक्षण अेक ज अभ्यासकम अने सरखी तालीम पामेला शिक्षको द्वारा सरकार हस्तक होवुं जोइअे.

लोकशाही लोको माटे ज होवाथी राष्ट्रना विकास माटे ज होवाथी जोशीया गिल्बर्टना शब्दो पुनःयाद अपाववा इच्छुं उकरडा जेवा तकवादी अलेलटप्पुओ जडहवड संकीर्ण बडाशनी बदबो फेलावता पोकळ वचनो

पोताना स्वार्थना माटे धिंगाणा खेली रहेला आजे सर्वेसर्वा थड पडीया छे त्यारे अमने अेवा माणसोनी जरूर छे के जेनी पासे मजबुत मन, विशाळ हैया, श्रध्दा कृति तत्पर होय, अमारे अेवा माणसो जोइअे छे जेओ सता स्थानने थी फेकातां टुकडाओथी वेचाइ नहि जेमनी पासे होय पोतिको अभिप्राय अने प्रबळ संकल्पशक्ति, प्रतिष्ठवान अने कदी असत्य न उच्चारनारा, भाषण खोरोनी सामे उभा रही अेमनी प्रपंच लीला अने खुशामत खोरी उपर मोढा मोढा कहेनारा अेवा माणसो आपो, खलील जिब्रानें राष्ट्र सामे खतरारूप अेक वात करी छे अेमणे कहयुं छे. जे राष्ट्रमां कपटी अने कारस्तानी माणसोनुं नेता तरीके सन्मान थाय अने काले अे सता परथी उतरी जाय. त्यारे अेनो फिटकार थाय. अेवु राष्ट्र तुच्छ छे.



दक्षाबेन आर. गोहिल

राज्य शास्त्र विभाग , सौराष्ट्र युनिवर्सिटी, राजकोट.